डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2015-2017
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

संस्कार सागर

• वर्ष : 17 • अंक : 194
• जून 2015
• मूल्य : 15 रु.

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नावई नवागढ़, नंदपुर

• डॉ.काशीप्रसाद त्रिपाठी, टीकमगढ़ •

वर्तमान का नावई ग्राम क्षेत्र, प्राचीन काल का नंदपुर, नावागढ़ चंदेल राजा मदन वर्मा के समय चंदेरी और राजस्थान तथा अन्य गैर क्षेत्रीय दलों से आने जाने वाले दिगम्बर जैन व्यापारियों, व्यवसायियों के मार्ग का एक पड़ाव स्थल नगर था। जो संलग्न पहाड़ियों, टोरियों पर बसा हुआ था। परन्तु अब पहाड़ियों पर बस्ती तो दूर की बात है, उसको भग्नावशेष सभी कुछ भूमिगत जमींदोज हो चुके हैं । पहाड़ियों की पश्चिमोत्तर तलहटी से संलग्न व्यपारियों के टांडों के आने-जाने का मार्ग था, जिसके मोड़ के पश्चिमी भाग के बड़े मैदान में, टांडों, का पड़ाव डलता था। कुछ दूरी पर चंदेल कालीन प्राचीन बड़ी बड़ी ईटों की एक बावड़ी है। जिसके जल का प्रयोग व्यापारी, पड़ाव वाले एवं अन्य सामान्य मुसाफिर करते रहे होंगे। बावड़ी के पास ही देवालय के अवशेष मात्र हैं । शायद यहाँ मुसाफिर स्नान के पश्चात देव दर्शन और ध्यान पूजा पाठ किया करते होंगे।

चंदेल शासन काल से पूर्व, बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र महोवासे देवगढ़ तक बेतवा, घसान केन, नदियों के मध्य वाला एक चारागाही वनाच्छादित, अविकसित पहाड़ी, टौरियाऊ ऊँचा-नीचा, जलविहीन राँकड़, लगभग निर्जन सा भूभाग था। जिसे विन्ध्याढवी कहा जाता था। जहाँ केवल कुछ मवेशी चराने वाले पशुपालक जातीय लोग एवं वनवासी ऊँचे टोरियाऊ स्थलों पर अस्थाई तौर पर रह कर पशु चराया करते थे जो नालों एवं नदियों के पास, जहाँ पानी रहता था, वहीं रहते थे और पानी सूखा तो दूसरे डबरों पर नालों के पास जहाँ पानी मिलता वहाँ पहुँच जाते थे। इस प्रकार लोगों का घुमक्कड़ी ज़ीवन बीतता रहता था।

बुन्देलखंड के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र की नदियाँ पहाड़ी पठारी उथलीं रही है, जिनमें से क्षेत्र का वर्षाती धरातलीय जल तेजी से प्रवाहित होकर क्षेत्र से बाहर चला जाता रहता था। क्षेत्र का पानी क्षेत्र में संग्रह कर लेने की कोई व्यवस्था ही नहीं थी। इस विशाल अविकसित भूभाग के विकास हेतु चंदेल नरेशों ने क्षेत्र का पानी क्षेत्र में रोकने के लिये तालाबों के निर्माण की अनूठी योजना प्रारंभ की थी। राजा धंगदेव (950-1002ई.) ने अपने खजुराहो मंदिर शिलालेख वि. स. 1011 (सन् 954 ई.) में निर्देशित किया था कि Attention was paid to irrigation work for the fecility of cultivation. The Khajuraho inscription of v.s.1011 for refers is the construction of embankrment to divert the course of ribers (v.26) evidently for the benefit of the peasentry concemed, expression like Nala (canal) puskarni (tanks) and Bhiti (embankment) are met within different chandelia records. These were usually located near the cultiable plotes of lands, apparently to supply water to the fields.

The early rulars of Khajuraho by Dr. S. K. Mitra p. 163 published 1950 calcutta.

इसके साथ ही मिट्टी पत्थर के तालाब पूरे दक्षिणी पूर्वी बुन्देलखण्ड के पहाड़ी टौरियाऊ

नदियों नालों पर निर्मित किये गये। क्षेत्र का पानी क्षेत्र में थमा तो लोगों का घुमन्तू जीवन थम गया। मदन वर्मा चंदेल राजा के शासन काल (1129-1163) ई. के समय मदनपुर ग्राम बसाया गया तथा वहीं विशाल मदन सागर तालाब एवं सुन्दर बैठक बनीं। मदन सागर महोबा मदन सागर जतारा ग्वाल सागर बल्देवगढ़ (बाँध) एवं मदन सागर अहार के बड़े-बड़े तालाब बनें। वर्तमान अहार का तालाब मदन सागर बना कर वहां बस्ती बसाई गई थी, उसका नाम मदन सागर पुरम रखा था। तालाब बनें, तो बहने वाला पानी तालाबों में इकट्ठा हुआ। तालाबों के बाँधों पर बस्ती बसी, बाँधों के पीछे बहारुओं में धान, बराई (गन्ना) बोया जाने लगा जिसे पत्थर के कोल्हुओं से पेर कर गुड़ बनाया जाने लगा। तालाबों के बाजुओं से पाँखी से संलग्न टेरट बने जिससे कृषि के क्षेत्र में क्रांति आई। चावल, गुड़, घी, तिलहन, चिरौंज़ी,शहद, महुआ गुली के खरीददार क्रेता श्रेष्ठि साहूकार, सेठ, व्यापारी अपने अपने टाड़ों (लद्दू, बैलों, पाड़ों के समूह) पर दिशावी वस्तुयें लाद कर अपने नौकरों, कार कूनों के साथ यहाँ आने लगे। यहां अपना सामान बेचने लगे, यहाँ का सामान क्रय कर अपने-अपने क्षेत्रों को ले जाने लगे। व्यापारी सेठों ने यहाँ अपने कारोबारी रखे और दुकाने खोली। जिस कारण पाड़ाशाह सेठ, सेठ रत्नपाल, देवपाल एवं अन्य बंजारा (व्यापार-बंजी करने वाले) सेठों ने अपने पड़ाव स्थलों पर दिगम्बर चैत्यालय(मंदिर) बनवाये तथा अन्य दिगम्बर कारकूनों को मंदिर निर्माण हेतु मदद प्रदान करते थे। तभी से यहाँ दिगम्बर जैन स्थापित हुए, चाहे वह गोलापूर्व हो अथवा परवार। हाँ, प्रारम्भ में बड़े-बड़े श्रेष्ठियों ने अपने-अपने पड़ाव स्थलों पर भौहंरा मंदिरों एवं चैत्यालयों का निर्माण करवाया था ताकि कोई प्रतिमाओं को खंडित न कर सके।

मदन वर्मा चंदेल राजा के समय नारायणपुर एक बड़ा नगर था। जिसके अग्रहार को अहार कहा जाता था। जहाँ के लड़ा नाले पर लडिया लोग रहा करते थे जो दिगम्बर जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें बनाया करते थे। यहां की पहाड़ी में मूर्तियाँ गढ़ने वाला पत्थर निकलता था। श्री शांतिनाथ की फुंट उँची प्रतिमा पापट ने सन् 1130 में बनवाई थी। यहीं रल्हण-देल्हण भी रहते थे। जिन्होंने कई प्रतिमाओं का निर्माण कराया था। जिनमें से कई प्रतिमाएँ नंदपुर (वर्तमान नावई) में सन् 1946 में प्रतिष्ठित करायी थी। इनमें से अतिक्रमण काल में भगवान अरनाथ की प्रतिमा श्रद्धालुओं ने संकीर्ण भौयरें में सुरक्षित कर दी। शेष को आताताइयों के अत्यंत क्रूरता से खंडित कर दिया, जो वर्तमान में संग्रहालय में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। नवागढ़ (नावई) चैत्यालय श्रेष्ठि (सेठ) रत्नपाल ने बनवाया था जो चंदेरी से आने जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर सोजना से उत्तर पूर्व चार मील की दूरी पर एक घूमदार पहाड़ी मोड़ से संलग्न पश्चिमी पार्श्व पर स्थित रहा है। रत्नपाल के भाई देवपाल ने बानपुर में सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया था।

नवागढ़ का उद्भव - आताताइयों ने नंदपुर नगर को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया जिनालयों को जमींदोज करके जगह-जगह शिलाखण्डों के ढेर बना दिये। प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचंद्र पुष्प ककरवाहा ग्राम वासी के पुण्ययोग से भगवान अरनाथ का भौंयरा सभी के समक्ष उद्घाटित हुआ। उस टीले से 100 से अधिक विशाल प्रतिमाओं के साथ-सिर, धड़, आसन-शीर्षभाग प्राप्त हुए जिनसे प्रतीत हाता है इतनी विशाल

प्रतिमाओं का जिनालय भी अत्यंत भव्य एवं विशाल होगा। वहां के श्रेष्ठी एवं अन्य वासी भी समृद्धशाली रहे होंगे। जैन शासक की मूर्ति से ज्ञात होता है नंदपुर (नवागढ़) समृद्धशाली, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने वाली जैनशासक की राजधानी रही होगी। जैन साधक (उपाध्याय) की मूर्ति तथा मानस्तम्भ पर भी जैन साधकों (उपाध्याय, आचार्य) की मूर्तियों का मिलना यह सिद्ध करता है कि यहां की पहाड़ियों में जैन श्रमण साधना करके संयमाचरण की परिपालना करते थे, यह पहाड़ियां जैन साधकों की साधना स्थली रही होगी - यह खोज का विषय है। आसपास की पहाड़ियों में न जाने कितने रहस्य छिपे हैं यहाँ के टीलों में संस्कृति ऐतिहासिक समृद्धता के विशेष शिल्प प्राप्त होंगे। शासन को इनका खनन-कराकर भारतीय पुरा सम्पदा को सुरक्षित कराना चाहिए।

नंदपुर (नावई) में देखें - नंदपुर (नावई) अरनाथजी का चैत्यालय (भौंहरा) मंदिर, मदन वर्मा चंदेल (वि.स. 1186-1220) तदनुसार 1129-1163 ई. के समय 1145-46 ई. में स्थापित हुआ था। अनेक खंडित प्रतिमाओं पर संवत् 1202-1203 अंकित है। प्रतिमाओं पर हिरण भी उत्कीर्ण हैं।

नवागढ़ मंदिर के अंदर एक विशाल संग्रहालय है जिसमें श्री आदिनाथजी, श्री शांतिनाथजी, पार्श्वनाथजी की विशाल खंडित प्रतिमायें दर्शनीय हैं। इस संग्रहालय में 1145-1146 ई. के प्राचीन चैत्यालय के अवशेष भी दर्शनीय हैं। ऐतिहासिक तौर पर नंदपुर चैत्यालय अहार के चैत्यालय से प्राचीन है। जैसे नंदपुर की प्रतिमायें 1145-46 ई. की हैं जो देल्हण, गल्हण ने बनवाई थी। यहाँ संग्रहालय में रखी अनेक प्रतिभाओं और मूर्तिखंडों पर गोलापूरब शब्द अंकित हैं, तात्पर्य कि नंदपुर (नवागढ़) में गोलापूरब जैन अनुयायी अधिसंख्य थे जो यहां के श्रेष्ठि (सेठ) व्यापारी थे। राष्ट्रकूट क्षेत्र से यहां चंदेल राज्य में व्यापारिक निवेश हेतु आमंत्रित किये गये हों अथवा श्रेष्ठियों के सह कारिंदे कारोबारी रहे हों जो कालान्तर यहीं बस गये हो।

नावागढ़ ग्राम के अन्दर बस्ती में एक देवी मंदिर के पास चबूतरे पर प्राचीन खंडित प्रतिमाओं का संग्रह हैं। यहीं ग्राम में एक प्राचीन चंदेल कालीन बावड़ी है। नावई में खेतों में जुताई करते खंडित मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। मकानों की नींव खोदते समय भी खंडित मूर्तियाँ मिल जाती हैं। तात्पर्य कि पुरातत्व दृष्टिकोण से यहाँ खुदाई खोज की जाय तो यहाँ का पुरा वैभव जाना समझा जा सकता है। वैसे यहाँ संग्रहालय में रखी 113 प्रतिमाओं का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। शेष का रजिस्ट्रेशन होना बाकी है।

नावई (नंदपुर) की प्राचीनता इससे भी सिद्ध होती है कि पास में उम्मरगढ़ (ऊमरी) में प्राचीन सूर्य मंदिर है। यहाँ समीप के प्राचीन ग्राम हैं जैसे सोजना, मैनवार, नैकौरा। मदनपुर चंदेल शासन काल की मुक्ति, प्रशासनिक मुख्यालय था जो नंदपुर (नावई) के दक्षिण में हैं। मदनपुर के उत्तर में एक नैकोरा ग्राम है जो एक ऊँची टोरिया पर है। यहाँ एक प्राचीन गढ़ी है। यह नैकोरा ग्राम मैनवार के पास दक्षिण पार्श्व में हैं।

इस प्रकार नवागढ़ (नावई) चंदेल शासन का विशेष ग्राम रहा है। वर्तमान में यहाँ की कार्यकारिणी समिति इस क्षेत्र के विकास में तन-मन-धन से समर्पित होकर कार्यरत है। ब्र. जयकुमार जी निशांत पूर्ण समर्पण के साथ अपने पिताजी की धरोहर का संरक्षण में तत्पर है। सभी धन्यवाद के पात्र हैं।